SALTOC Project
Title: Madhumati
Imprint: Udayapura: Rājasthāna Sāhitya Akādami
OCLC: 3195624
Volume 19: no 2, February 1980

TOC Supplied By: University of Chicago
शुरुचि सम्पन्न पाठकों के लिए

दो और अभिनव प्रकाशन

श्रीध्र प्रकाश

बिम्ब-प्रतिबिम्ब

श्री राम बेसवाल की तरोताजा
कविताओं का संग्रह

राजस्थान के ब्राह्मणिक संस्कृत कथाकारों
का प्रतिनिधि कथा-संकलन

सम्पादक-डॉ. पुष्करदत्त शर्मा

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर

डॉ। राजेन्द्र शर्मा, निदेशक, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर द्वारा प्रकाशित तथा
श्री कालीनाथ मेमारिया द्वारा धीमीत प्रेस, उदयपुर में प्रकाशित।
हार्दिक आभिषेक

राजस्थान साहित्य प्रकाशन, उदयपुर के विधान की घारा न के तहत हैं, दयाखण्ड बिजया, कोटा को राज्य सरकार ने दिनांक 20-2-80 से आयामी 3 वर्ष की ग्रीष्मक लगने के लिए राजस्थान साहित्य प्रकाशन, उदयपुर का अध्यक्ष नियुक्त किया है।

कृपया ध्यान दें

○ डा. संवरलाल जोशी माह अप्रैल 1960 से ‘मधुमली’ सम्पादित करेंगे।

इनका पता है—

डा. संवरलाल जोशी,
382-ए/36, जवाहर नगर,
लोहागर रोड,
अजमेर (रज.)

○ संपादक विषयक पत्रावल संपादक से तथा व्यक्तित्व संबंधी पत्रावल अध्यक्ष कार्य-लय में लिख दिया।

० उपयुक्त बांक द्वारा द्वारा लिखिता में रेखा कर आगे अवगत अतिशय रचना प्राप्त कर सकते हैं। तीन माह की ग्रंथि के पश्चात उपाध्यक्ष नियुक्त किया है।

अनुक्रम

पृष्ठ संख्या

सम्पादकीय
कविताएँ
कविवादें
लेख
उपन्यासकार डॉ. लक्ष्मीराम लाल:
शब्दी वर्धिला इत्यादि
हिंदी रंगमंच को खोज

भाग्यवती सीताकोटी
शंखेचकाम श्रंगुष
शिवमली
सत्यपाल वुध
हृदिएजुत यांदव

ंरूपी दर्शन सीताराम
ब्रजमोहन बाहु
संसाधकीय

साहित्यकार एक अंग तो संबंधित और अभियंताका प्रती होने के नाते विशिष्ट है जबकि और जन-जीवन से जुड़ा होने के नाते सामाजिक भी है। मानव-जीवन की परंपरागतियों से जुड़ा हुआ साहित्यकार मानव-जीवन की सबसे परंपरागतियों और मन: समूहों का सफल, सामाजिक विकास अनुपस्थित नहीं करेंगे तो और करेगा क्या?
हो साहित्य भावना है। किंतु साहित्य केंद्रों-कोटो मात्र नहीं है, बल्कि यहाँ के सामाजिक विकासके पहली निर्देशकों में लाभ और जीवन-संघर्ष के माध्यम से विभिन्न विषयों को जानने वालों प्रक्रिया मात्र उन के लिए क्षेत्र भी देता है। यह साहित्य की आदरणीय श्रेष्ठता है। कई भाषाओं के लिए ‘आदरणीय’ शब्द से ही विचार होते ही है। उन्हें लक्ष्य कि ‘आदरणीय’ शब्द में प्रधान प्रतीति संस्कृति की अब्रामिहार्य, मानव-वातावरण बातें उन पर शोकी जा रहे हैं। उन्हें प्रतिभाकारी बनाना जा रहा है। ऐसा विलक्षण नहीं है।
कोई भी व्यक्ति, परम्परा का संस्करण भी, प्रतीति विरोधी नहीं होता।

यह बात बताना है कि ‘प्रतीति’ नाम से अलग-अलग मानवसंवाद के अभिव्यक्ति बन जिसी प्रतीति विवादार्थ के पारंपरिक नियम की ही अपनी कर चलने वाली प्रतीति के प्रवेश-मान है। जिसके भी देश की युगों में रमणीय संस्कृतिक नियमों को नकारात्मक छोड़कर रहे हो... इससे भी आगे... धीरे में रहने, विवाद की कोई भी विचारों पर आर्थिक प्रभाव करने की चेतावनी फताफत करते हुए... कह जबके “प्रतीति” का शब्द संपूर्ण हो जाए। तो कोई फर्क नहीं पड़ता।

राजनीति जन-जीवन का अंग है अवश्य, और जन-जीवन का यथार्थ विवाद करते समय राजनीति भी बांटी है। साहित्य में अवधारणा ही, आत्मसंयुक्त हो, अभिव्यक्ति हो बर्तमान तक न ही हैं, किंतु यह साहित्य पर अवधारणा पर प्रस्ताव लेते रहते की चेतावनी रहे, तो जीवन में साहित्यकार की यह शक्ति नहीं होगा। जीवन की हर उपलब्धि... धर्म, धार्मिक विकास, नीति (समाजनीति, राजनीति), भक्ति भाव, जीवन की हर व्यवस्था...